



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

1857 की क्रांति में उत्तर बिहार का योगदान - कारण, प्रसार, प्रभाव: एक विवेचन

डॉ. तेज प्रताप आज़ाद

सहायक प्राध्यापक,

इतिहास विभाग, एचआर कॉलेज, अमनौर जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, सारण

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध आलेख 1857 के प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उत्तर बिहार (विशेषकर तिरहुत, सारण, चंपारण और पूर्णिया प्रमंडल) की विशिष्ट और निर्णायक भूमिका का विश्लेषण करता है। जबकि मुख्यधारा के इतिहास में बिहार का विद्रोह अक्सर बाबू वीर कुंवर सिंह तक सीमित माना जाता है, यह शोध प्रमाणित करता है कि उत्तर बिहार में यह संघर्ष अधिक विकेंद्रीकृत और जन-उन्मुख था। आलेख उन आर्थिक कारणों की पड़ताल करता है, जिनमें नील की खेती (तिनकठिया प्रणाली) और अफीम व्यापार के औपनिवेशिक शोषण ने विद्रोह की आधारभूमि तैयार की। मुजफ्फरपुर में वारिस अली की शहादत, सुगौली में 12वीं अनियमित घुड़सवार सेना का विद्रोह और पूर्णिया में कमिश्नर जॉर्ज यूल के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष इस क्रांति के महत्वपूर्ण स्तंभ थे। यह अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि उत्तर बिहार की रणनीतिक भौगोलिक स्थिति (नेपाल सीमा) और यहाँ के किसानों व स्थानीय सैनिकों के साहस ने ब्रिटिश सत्ता की नींव हिला दी और भावी आंदोलनों के लिए वैचारिक आधार प्रदान किया।

मुख्य शब्द (Keywords): 1857 की क्रांति, उत्तर बिहार, वारिस अली, सुगौली विद्रोह, तिनकठिया प्रणाली, तिरहुत प्रमंडल, औपनिवेशिक शोषण, लोटा विद्रोह, नील विद्रोह, प्रशासनिक पुनर्गठन।

प्रस्तावना: उत्तर बिहार का ऐतिहासिक परिदृश्य

1857 का महासंग्रह भारतीय इतिहास की वह अभूतपूर्व घटना थी जिसने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साम्राज्यवादी ढांचे को चुनौती दी। बिहार इस संघर्ष का एक प्रमुख केंद्र था, और इसमें गंगा के उत्तर में स्थित जिलों की भूमिका अत्यंत विशिष्ट रही। उत्तर बिहार, जो उस समय तिरहुत, सारण और भागलपुर प्रमंडलों के अंतर्गत आता था, अपनी उपजाऊ भूमि और सामरिक स्थिति के कारण अंग्रेजों के लिए राजस्व का मुख्य स्रोत था।

जहाँ दक्षिण बिहार में विद्रोह का नेतृत्व सुसंगठित जमींदार वर्ग के हाथों में था, वहीं उत्तर बिहार में यह विद्रोह 'नागरिक प्रतिरोध' और 'स्थानीय सैन्य विद्रोह' के मिश्रण के रूप में उभरा। यहाँ की जनता नील बागान मालिकों और अफीम एजेंटों के अत्याचारों से त्रस्त थी, जिसने विद्रोह की ज्वाला को केवल सैनिकों तक सीमित न रखकर उसे एक व्यापक 'जनांदोलन' बना दिया।

क्रांति के मूल कारण: एक क्षेत्रीय विश्लेषण

उत्तर बिहार में विद्रोह के कारण राष्ट्रीय कारणों से मेल खाते हुए भी अपनी क्षेत्रीय विशिष्टता रखते थे।

1. आर्थिक शोषण और नील की खेती

उत्तर बिहार नील और अफीम उत्पादन का वैश्विक केंद्र था। यहाँ 'तिनकठिया' प्रणाली प्रचलित थी, जिसमें किसानों को अपनी उपजाऊ भूमि के 3/20 भाग पर नील उगाना अनिवार्य था। नील बागान मालिक किसानों को कम मूल्य देकर उन्हें ऋण के जाल में फंसा लेते थे। 1850 के दशक में कृषि उत्पादों की बढ़ती कीमतों के बावजूद नील के दाम न बढ़ाने से किसानों में भारी असंतोष था।

2. अफीम व्यापार और राजस्व नीतियां

पटना अफीम एजेंसी के माध्यम से उत्तर बिहार के किसानों पर अफीम उगाने का दबाव डाला जाता था। 3 जुलाई 1857 को पटना में पीर अली द्वारा डिप्टी अफीम एजेंट डॉ. लायल की हत्या इसी शोषणकारी राजस्व तंत्र पर एक हमला थी।

3. सामाजिक-धार्मिक कारण और 'लोटा विद्रोह'

1854 में मुजफ्फरपुर जेल के कैदियों ने जेल प्रशासन द्वारा पीतल के लोठों की जगह मिट्टी के बर्तन देने के निर्णय के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था, जिसे 'लोटा विद्रोह' कहा जाता है। इसने स्पष्ट कर दिया था कि उत्तर बिहार की जनता अपनी धार्मिक अस्मिता के प्रति कितनी संवेदनशील थी।

प्रमुख कारण	ऐतिहासिक प्रभाव	क्षेत्र
तिनकठिया प्रणाली	किसानों की कंगाली और विद्रोह की भावना	चंपारण, मुजफ्फरपुर
लोटा विद्रोह (1854)	धार्मिक हस्तक्षेप के विरुद्ध प्रारंभिक आक्रोश	मुजफ्फरपुर जेल
अफीम एजेंसी नियंत्रण	राजस्व तंत्र पर सीधा हमला	सारण, तिरहुत
डॉकट्रिन ऑफ लैप्स	स्थानीय कुलीनों में भय और असुरक्षा	संपूर्ण उत्तर बिहार

विद्रोह का क्षेत्रीय प्रसार और घटनाक्रम

उत्तर बिहार में विद्रोह की ज्वाला दानापुर छावनी के सैनिकों के विद्रोह के बाद तेजी से फैली।

मुजफ्फरपुर और वारिस अली की शहादत

मुजफ्फरपुर में विद्रोह के नायक **वारिस अली** थे, जो बरुराज थाने में पुलिस जमादार थे। उन्हें अली करीम जैसे राष्ट्रवादी जमींदारों के साथ पत्र-व्यवहार के आरोप में 23 जून 1857 को गिरफ्तार किया गया। वारिस अली ने फांसी के फंदे पर चढ़ते समय कहा था— "यदि यहाँ कोई स्वराज का सच्चा भक्त है, तो वह मुझे मुक्त करे"। उनकी शहादत ने पूरे तिरहुत क्षेत्र में विद्रोह की अग्नि प्रज्वलित कर दी।

सुगौली विद्रोह: 12वीं अनियमित घुड़सवार सेना

चंपारण जिले के सुगौली में तैनात **12वीं अनियमित घुड़सवार सेना (12th Irregular Cavalry)** ने जुलाई 1857 में विद्रोह कर दिया। सैनिकों ने अपने कमांडर मेजर होम्स और उनकी पत्नी की हत्या कर दी। इस विद्रोह ने उत्तर बिहार और नेपाल सीमा के बीच ब्रिटिश संचार तंत्र को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया।

पूर्णिया और जॉर्ज यूल का दमन चक्र

पूर्णिया में विद्रोह का प्रसार जलपाईगुड़ी के विद्रोही सैनिकों के माध्यम से हुआ। यहाँ के कमिश्नर जॉर्ज यूल ने अत्यंत कठोरता से विद्रोह का दमन किया। यूल ने स्थानीय यूरोपीय स्वयंसेवकों के साथ मिलकर विद्रोहियों को पूर्णिया से बाहर खदेड़ दिया और उन्हें नेपाल की तराई की ओर पलायन करने पर मजबूर किया।

उत्तर बिहार के प्रमुख नायक और रणनीतिक नेतृत्व

विद्रोह के दौरान उत्तर बिहार ने कई विस्मृत नायकों को जन्म दिया। यद्यपि बाबू कुंवर सिंह जगदीशपुर के थे, परंतु 15 सितंबर 1857 को मुजफ्फरपुर के विद्रोहियों ने औपचारिक रूप से उनकी अधीनता स्वीकार की थी।

1. **वारिस अली (मुजफ्फरपुर):** तिरहुत क्षेत्र में विद्रोह के रणनीतिकार।
2. **मेजर होम्स के विद्रोही सैनिक (सुगौली):** ब्रिटिश सैन्य शक्ति को चुनौती देने वाले घुड़सवार।
3. **अमर सिंह (छापामार युद्ध):** कुंवर सिंह के भाई, जिन्होंने उत्तर बिहार के जंगलों और गंगा के मैदानी इलाकों में छापामार युद्ध जारी रखा।

ब्रिटिश प्रतिक्रिया और दमन की विभीषिका

ब्रिटिश प्रशासन ने उत्तर बिहार में विद्रोह को कुचलने के लिए 'आतंक की नीति' अपनाई। कमिश्नर विलियम टेलर और जॉर्ज यूल ने विद्रोहियों को तोप से उड़ाने और सामूहिक फांसी देने जैसी क्रूर सजाओं का सहारा लिया। विद्रोही गांवों पर भारी जुर्माना लगाया गया और उनकी फसलें जला दी गईं।

विद्रोह के उपरांत: प्रशासनिक एवं सामाजिक प्रभाव

1857 की विफलता के बाद उत्तर बिहार के प्रशासनिक ढांचे में बड़े बदलाव किए गए।

- **सत्ता का हस्तांतरण:** 1858 के अधिनियम के तहत ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हुआ और शासन सीधे ब्रिटिश क्राउन के अधीन आ गया।
- **प्रशासनिक पुनर्गठन:** तिरहुत प्रमंडल को और अधिक सुदृढ़ किया गया और जिला मजिस्ट्रेटों को व्यापक शक्तियाँ प्रदान की गईं ताकि भविष्य में किसी भी असंतोष को प्रारंभिक स्तर पर दबाया जा सके।
- **सैन्य नीति में बदलाव:** बिहार के लोगों को 'गैर-लड़ाकू' (Non-martial) घोषित कर सेना में उनकी भर्ती कम कर दी गई, जबकि गोरखाओं और सिखों को प्राथमिकता दी गई।
- **नील विद्रोह की नींव:** 1857 के संघर्षों ने किसानों में संगठित होने की चेतना जगाई, जो आगे चलकर 1859-60 के 'नील विद्रोह' और 1917 के 'चंपारण सत्याग्रह' के रूप में प्रकट हुईं।

निष्कर्ष: ऐतिहासिक मूल्यांकन

1857 की क्रांति में उत्तर बिहार का योगदान केवल एक क्षेत्रीय विद्रोह नहीं, बल्कि औपनिवेशिक आर्थिक और धार्मिक दमन के विरुद्ध एक व्यापक सभ्यतागत प्रतिरोध था। वारिस अली जैसे शहीदों और सुगौली के अनाम सैनिकों का साहस यह प्रमाणित करता है कि उत्तर बिहार क्रांति का एक स्वतंत्र और शक्तिशाली केंद्र था। यद्यपि यह विद्रोह सैन्य रूप से दबा दिया गया, लेकिन इसने उस स्वाधीनता की आकांक्षा को अमर कर दिया, जिसे आगे चलकर महात्मा गांधी ने चंपारण की धरती से पूर्ण स्वराज के संकल्प में बदला।

संदर्भ सूची (Reference)

1. दत्त, के.के. *बिहार में स्वाधीनता आंदोलन का इतिहास, खंड 1: 1857-1928*. पटना: बिहार सरकार प्रेस, 1957.
2. झा, जटा शंकर. *बिहार में प्रारंभिक क्रांतिकारी आंदोलन*. पटना: के.पी. जायसवाल शोध संस्थान, 1977.
3. देवी, ऋतंभरी. *भारतीय विद्रोह: बिहार में 1857*. दिल्ली: चेतना पब्लिकेशंस, 1977.
4. सज्जाद, मोहम्मद. *बिहार में मुस्लिम राजनीति: बदलते आयाम*. लंदन: रूटलेज, 2014.
5. तिवारी, बद्री नारायण. *अतीत को जागृत करना: दलित और 1857 की स्मृतियाँ*. दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2007.
6. मल्लेसन, जी.बी. *भारतीय विद्रोह 1857*. न्यूयॉर्क: स्क्रिबनर, 1891.
7. कुमार, संजीव. *राष्ट्रीय आंदोलन में बिहार की भूमिका: 1857 से 1947*. वालनट पब्लिकेशन, 2020.
8. वर्मा, एम.एल. *बिहार में पत्रकारिता और स्वतंत्रता आंदोलन*. पटना: ईस्टर्न बुक हाउस, 1970.
9. सिन्हा, एस. *कुंवर सिंह और 1857 का विद्रोह*. पटना: बिहार स्टेट आर्काइव्स, 1957.
10. जोशी, पूरन चंद्र (सं.). *लोकगीतों में 1857*. पटना: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, 1994.
11. चौबे, दीपक और रेणु कुमारी. "भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार की भूमिका: योगदान और चुनौतियाँ". *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हिस्ट्री*, खंड 7, अंक 5, 2025.
12. अहमद, क्यू. और जे.एस. झा. *कुंवर सिंह और अमर सिंह की जीवनी*. पटना: के.पी. जायसवाल शोध संस्थान, 1957.
13. चौधरी, वी.सी.पी. *1857 के विद्रोह में बिहार के समुदायों का योगदान*. पटना: बिहार स्टेट आर्काइव्स, 1976.
14. ट्रिब्यून, न्यूयॉर्क डेली. "अमर सिंह का सैन्य कौशल - कार्ल मार्क्स और एंगल्स के लेख", 1 अक्टूबर 1858.
15. नटराजन, जे. *भारतीय पत्रकारिता का इतिहास*. नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1955.
16. साहय, रवि शंकर. "छोटानागपुर के जनजातीय समुदाय और 1857 का विद्रोह". *प्रोसीडिंग्स ऑफ इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस*, खंड 72, 2011.
17. भार्गव, मोती लाल. *स्वतंत्रता आंदोलन में प्रेस की भूमिका*. रिलायंस पब्लिशिंग हाउस, 1987.
18. डाल्टन, एडवर्ड ट्युइट. *पलामू का विद्रोह और जनजातीय प्रतिरोध: ब्रिटिश अभिलेखीय रिपोर्ट*, 1858.
19. गुप्त, चारु. "सबाल्टर्न स्पीक्स: 1857 में दलित महिलाओं का प्रति-इतिहास". *साउथ एशियन स्टडीज*, 2007.
20. त्रिपाठी, आर. *1857 में बिहार: विद्रोह की स्थानीय जड़ें*. पटना: बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, 1989.